

# आज का पुरुषार्थ, 13 July 2022

From: BK Suraj bhai

Website: [www.shivbabas.org](http://www.shivbabas.org)

**धारणा – "आज हम पुरुषार्थ करेंगे निराकारी स्थिति में अधिक से अधिक समय तक स्थित रहने की "**

स्वयं भगवान ने हम सभी महान आत्माओं को संदेश दिया, आदेश दिया ..

**" निरंतर मुझे याद करो .. कम से कम आठ घन्टे प्रतिदिन तो मुझे अवश्य याद करो .. इससे ही तुम कर्मातीत बनेंगे .. और यही तुम्हारी सबसे बड़ी सेवा भी होंगी "**

**भगवानुवाच है ..**

**" जो बच्चे रोज मुझे आठ घन्टे याद करते हैं .. वे मेरे सबसे अधिक मददगार हैं .. क्योंकि वे इस संसार में सुख शान्ति पवित्रता और शक्तियों की किरणें फैलाते हैं "**

तो बहुत बड़ा **योगदान** है यह। हम इस **प्रकृति** को change करने में, संसार के **वायुमंडल** को change करने में, सारे विश्व को **परिवर्तित** करने में यह देख सकते हैं कि हम .. योग का अपना चार्ट बहुत बढ़ाये।

परन्तु होता क्या है, जब बाबा कहते हैं मुझे 8 घन्टा रोज याद करो .. तो चेक कर सकते हैं मन से तुरंत आवाज आ जाती है नहीं, यह अपने से नहीं होगा।

दुसरे कुछ बुद्धिमान सोचते हैं नहीं, यह तो वही करेंगे जो **विजयीरतन** है, एक सौ आठ (**108**) में है। हमारे नम्बर इसमें कहाँ? और ऐसा ऐसा सोचकर वह अपने को ढीला कर देते हैं। **योग** का प्लैन नहीं बना पाते हैं।

परन्तु, यदि मन में दृढ़ **विश्वास** हो कि भगवान ने कहा है, तो मुझे उसकी आज्ञा का पालन करना ही है।

तो हम इसका एक प्लैन बनायेंगे और **ईश्वरीय शक्तियाँ** भी हमें मिलेंगी। क्योंकि हम दृढ़ता पूर्वक कोई कार्य करने के लिए तत्पर होते हैं, तो **परमात्म सहयोग** हमें तुरंत प्राप्त होने लगता है। यह रहस्य हमें सदैव याद रखना चाहिए।

**तो सोच ले सदा कौन याद कर सकते है?**

**पहली बात ....**

जो सबकुछ भूल जाये। **देह भी याद न रहे, पास्ट भी याद न रहे।** केवल वर्तमान का आनन्द ले। शास्त्रों के बातें जो पढ़ी-लिखी है वह भी भूल जाये। बुद्धि के अभिमान को भी भूल जाये।

**और दूसरी बात ....**

**सबकुछ सेवा में समर्पित कर दे।** समर्पण भाव, सबकुछ तेरा। **राजयोग** अर्थात .. मेरा कुछ भी नहीं। जो मैं और मेरे को समर्पित करने में समर्थ है वही निरंतर योगी बन सकते है।

**चेक कर ले ..**

हमारे अंदर **समर्पित भाव** है या नहीं है। इसका अर्थ यह नहीं की हम सबकुछ यज्ञ में देकर यहाँ आकर बैठ जाये!

यज्ञ में आकर बैठने वाले भी योगी नहीं बन सकते। अगर उनको योग का interest न हो, योग के लिए लक्ष्य न बनाये। उतनी लगन उनके मन में न हो।

तो समर्पित भाव अपनायें।

" मेरा कुछ भी नहीं "

**हमारे मन से आज आवाज निकालती रहे ...**

" बाबा .. सबकुछ तेरा .. यह तन तेरा .. यह मन तेरा .. यह बुद्धि तेरी .. यह धन तेरा .. यह कारोबार तेरा .. यह मकान, दुकान तेरी .. यह सम्बन्धी, बच्चे, पति-पत्नी सब तेरे .. यह कर्म तेरे .. यह जिम्मेदारियां तेरी .. यह मन के बोझ तेरे .. हर लो सब .. ले लो सब "

**और बाबा ऊपर से कहेगा ...**

" बच्चे .. मेरा सबकुछ तेरा .. ले लो सब .. सर्व खजाने तुम्हारे लिए .. तुम्हारे भण्डारें भरपूर हो "

और हम तृप्त आत्मा, संतुष्ट आत्मा बनकर निरंतर योग का आनन्द ले सकेंगे।

**तो आज जरा अपने से चिन्तन करे ..**

" मुझे अपने योग के चार्ट को बहुत बढ़ाना है .. चार घन्टे से आगे ले चलकर आठ घन्टे तक ले चलना है "

और कम से कम रविवार को जब हम **भट्टी** करे तब तो इसका सुन्दर अनुभव करते ही रहना है।

**तो आज समर्पण भाव का हम प्रैक्टिस करेंगे ...**

" **बाबा अब यह तन तेरा** "

और बच गई मैं आत्मा, "निराकार" ...

इसका आज सारा दिन आनन्द लेंगे ...

॥ ओम शान्ति ॥

**BK Google:** [www.bkgoogle.org](http://www.bkgoogle.org)

**Website:** [www.shivbabas.org](http://www.shivbabas.org)